

शेख फरीद - सबद ५
जित दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
सलोक, शेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७७

जित दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
मलक जि कंनी सुणीदा मुह देखाले आइ ॥
जिंद निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥
साहे लिखे न चलनी जिंदू कू समझाइ ॥
जिंद वहुटी मरण वर लै जासी परणाइ ॥
आपण हथी जोल कै कै गल लगै धाइ ॥
वालह निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आप मुहाइ ॥ १ ॥

सार: जीवन का अंत पूर्वनिर्धारित है, यह मृत्यु की अनिवार्यता है। यह गहन और शाश्वत रहस्य अंतिम समानता को दर्शाता है, जो किसी के प्रति पक्षपात नहीं करता और सभी जीवों में समानता रखता है। यह हमें जीवन की क्षणिकता को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। जबकि इस अस्थायित्व को अपनाना कठिन हो सकता है, यह हमें प्रत्येक क्षण की कद्र करने और अपने प्रयासों में उद्देश्य खोजने का भी साहस देता है।

जित दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
विवाह के शुभ अवसर की तिथि और समय पहले से तय होता है जिसका अर्थ है कि जन्म और मृत्यु का दिन और समय भी पूर्वनिर्धारित है।

मलक जि कंनी सुणीदा मुह देखाले आइ ॥

मालिक, उस सर्वव्यापी ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृजन, पोषण और विनाश करती है। जिसके बारे में हमने केवल सुना है जिसने स्वयं को प्रकट कर नश्वरता की वास्तविकता का अनुभव करने का संदर्भ दिया है।

जिंद निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥

जब शरीर नष्ट हो जाता है तब आत्मा को मुक्ति मिलती है। यह हमारे अस्थायी भौतिक अस्तित्व से हमारे लगाव को उजागर करता है।

साहे लिखे न चलनी जिंदू कू समझाइ ॥

जीवन का अंत पूर्वनिर्धारित है, जो मृत्यु की अनिवार्यता की वास्तविकता को उजागर करता है।

जिंद वहुटी मरण वर लै जासी परणाइ ॥

चेतना दुल्हन है और मृत्यु दूल्हा है जो उसे विवाह करके ले जाएगा। यह दर्शाता है कि जब क्षणिक भौतिक अस्तित्व समाप्त होता है तब हमारी जागरूकता शाश्वत ऊर्जा के साथ एक हो जाती है।

आपण हथी जोल कै कै गल लगै धाइ ॥

मृत्यु ने शरीर को आराम दिया है अब यह किसी को थामने के लिए कैसे आगे बढ़ेगा? यह हमारे भौतिक शरीर की नश्वरता दिखाती है।

वालह निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥

क्या आपने नरक से स्वर्ग तक जाने वाले पुल की छवि के बारे में नहीं सुना है जिसे बाल से भी संकरा कहा जाता है? यह कल्पना इस बात का प्रतीक है कि अवगुण-सद्गुण के बीच के नाजुक संतुलन पर ध्यान भटकना आसान है।

फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आप मुहाइ ॥ १ ॥

फरीद कहते हैं कि चेतावनी की पुकारें बज रही हैं, अब सावधान रहें - खुद को लुटने न दें। प्रतीकात्मक रूप से, जैसे-जैसे समय बीतता है और मृत्यु निकट आती है आध्यात्मिक मार्ग पर चलना और इस जीवन का अधिकतम लाभ उठाना आवश्यक है। (१)

तत्त्व: शेख फ़रीद कहते हैं कि जैसे-जैसे समय बीतता है और मृत्यु निकट आती है, यह फायदेमंद होता है कि हमारे कार्य सद्गुणों के अनुसार हों ताकि हम एक संतोषजनक जीवन जी सकें। हमारे अच्छे कर्म ही वास्तविक मूल्य की संपत्ति हैं जो हमारे अस्तित्व के महत्व को परिभाषित करते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com